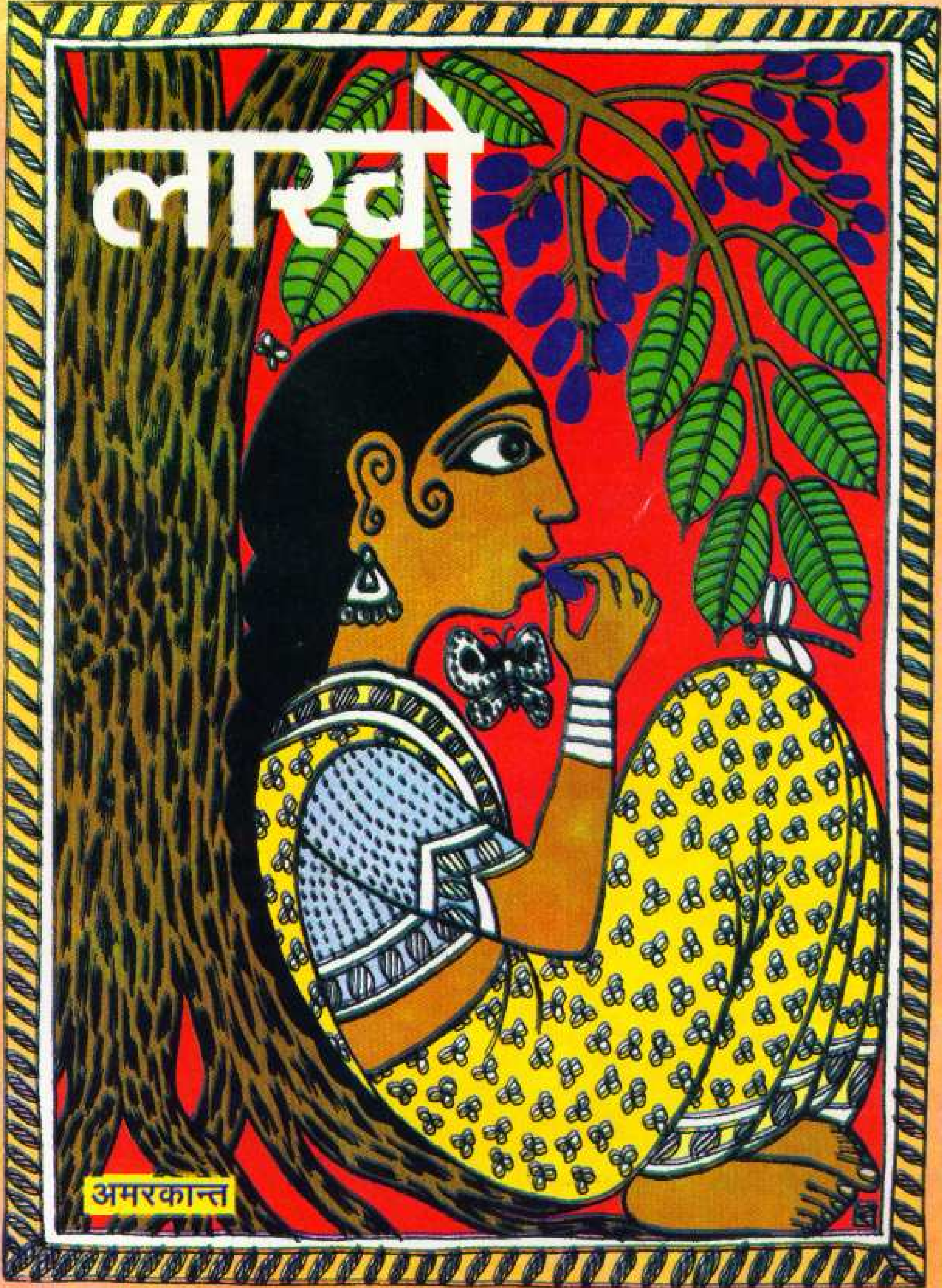


सर्च - राज्य संसाधन केन्द्र, हरियाणा

अमरकान्त

(जन्म : जुलाई 1925 में ग्राम नगरा, ज़िला बलिया, उत्तर प्रदेश में।)

अमरकान्त हिन्दी के बड़े प्रसिद्ध कहानीकार हैं। वे प्रेमचन्द परम्परा के कहानीकार हैं। 1942 में स्वतन्त्रता आन्दोलन में शामिल होने के कारण पढ़ाई अधूरी रह गई। 1947 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय से बी.ए. किया।

1948 में आगरा के दैनिक पत्र 'सैनिक' के संपादकीय विभाग में नौकरी की। आगरा में ही प्रगतिशील लेखक संघ में शामिल हुए और कहानियाँ लिखनी शुरू कीं। इसके बाद इलाहाबाद से निकलने वाली 'अमृत पत्रिका', 'कहानी' तथा 'दैनिक 'भारत' के सम्पादन से जुड़े रहे। 'डिप्टी–कलक्टरी' कहानी पर पुरस्कार मिला। आजकल इलाहाबाद से निकलने वाली पत्रिका 'मनोरमा' के संपादकीय विभाग में कार्यरत हैं।

प्रकाशित पुस्तकें :

कहानी संग्रह : ज़िन्दगी और जोंक, देश के लोग, मौत का नगर, मित्र–मिलन, कुहासा, एक धनी व्यक्ति का बयान

उपन्यास : सूखा पत्ता, आकाशपक्षी, काले–उजले दिन, सुखजीवी, बीच की दीवार, ग्राम सेविका, खुदीराम, सुन्नर पांडे की पतोहू और वानर–सेना (बाल–उपन्यास)।

लाखो

(कहानी)

अमरकान्त

'सर्च' – राज्य संसाधन केन्द्र, हरियाणा द्वारा तैयार एवं प्रकाशित
तथा भारत ज्ञान विज्ञान समिति, हरियाणा द्वारा पुनर्प्रकाशित।

परामर्श : शुभा

सम्पादन : अविनाश सैनी

सम्पादकीय सहकर्मी : नरेश प्रेरणा
प्रूफ संशोधन : मनीषा

प्रोडक्शन : अविनाश सैनी, सुभाष

चित्रांकन एवं आवरण : कैरेन हेडॉक

मुद्रक : सर्वहितकारी मुद्रणालय, दयानन्द मठ, रोहतक।
प्रकाशक : भारत ज्ञान विज्ञान समिति, हरियाणा।

Lakho : *A Story by Amarkant*

सम्पर्क
भारत ज्ञान विज्ञान समिति, हरियाणा
42/29, चाणक्यपुरी, नज़दीक शीला सिनेमा, सोनीपत रोड, रोहतक–124001
फोन : 01262–44916, 57371

दो शब्द

लाखो एक स्त्री के जीवट की कथा तो है ही, साथ ही उस समाज की कथा भी है जो उसे इन्सान की तरह जीने नहीं देता। यह कहानी सम्पत्ति के संदर्भ में स्त्रियों की अधिकारहीनता से भी जुड़ी है। स्त्रियों की एक भारी कमी कह लीजिये या उनका मनुष्यत्व कह लीजिये, एक ऐसी प्रवृत्ति उनमें पाई जाती है कि वे बार-बार भावनात्मक उत्पीड़न की शिकार होती हैं। सगे-सम्बन्धी, प्रेम और वात्सल्य, ये सब उन्हें कितनी बार अपना हित भी नहीं देखने देते। लाखो इसी भावनात्मक धोखे के कारण जान से हाथ धो बैठती है।

इससे पहले हम सहीराम की कहानी *'उसका घर'* प्रकाशित कर चुके हैं। यह हरियाणा की पृष्ठभूमि में लिखी गई कहानी थी और लाखो उत्तरप्रदेश के एक पहाड़ी इलाके से जुड़ी कहानी है। उसका घर और लाखो की कहानी एक ही है। दुनिया में करोड़ों औरतों की कहानी भी यही है। हम जानते हैं कि पूरी दुनिया का 70 प्रतिशत काम औरतें करती हैं। जबकि आमदनी में उनके हिस्से

केवल 10 प्रतिशत आता है और वे केवल 1 प्रतिशत सम्पत्ति की स्वामी हैं। काम और संसाधनों का यह असंगत, अन्यायपूर्ण बटवारा ही औरत के श्रम को, उसके मनुष्यत्व को छिपाता है और हम कहते हैं कि औरत *'कमज़ोर'* है। नवपाठक ही नहीं, समझदार पढ़े-लिखे लोगों को भी अभी अपने समाज की इस केन्द्रीय विडम्बना को समझना है।

प्रमोद गौरी

निदेशक,

'सर्च' - राज्य संसाधन केन्द्र, हरियाणा।

लाखो

अमरकांत



खिचड़ी के मेले में मैंने उसे पहली बार देखा। चूड़ी, टिकुली और सिंदूर की एक दुकान के सामने बैठी वह रोए जा रही थी। दुकानदार उसे तरह-तरह की चूड़ियाँ दिखाकर फुसला रहा था। पर उसका उस पर कोई असर नहीं हुआ। वह कभी ज़ोर-ज़ोर से रोती और कभी अपने मुँह को

घुटनों के बीच में दबाकर। बीच-बीच में सिर उठाकर वह इधर-उधर देखती, जैसे किसी को खोज रही हो।

मेरा कस्बानुमा गाँव गंगा के किनारे बसा है। वहीं रेत पर नदी के किनारे ही वह मेला लगता है, जहाँ दूर-दूर के गाँवों से लोग आकर स्नान करते हैं। ख़ूब चहल-पहल रहती है। रंग-बिरंगे कपड़ों में श्रद्धालु स्त्री-पुरुष, बच्चों का शोरगुल, चूड़ी-रिबन-चोटी की दुकानें, बाजा-पिपिहरी, लाउडस्पीकरों की तेज़ आवाज़ें, मंदिरों में चढ़ावा और नदी पर नावखोरी। लेकिन शाम होने पर भीड़ छँटने के बाद भी वह औरत वहीं बैठी थी और उसकी खोज-ख़बर लेने कोई नहीं आया था। उसके आसपास दो-चार औरतें और कुछ लोग खड़े थे और उसे बड़ी उत्सुकता से निहार रहे थे।

वह लाल बार्डर की एक पीली साड़ी पहने हुए थी। उसकी माँग भरी हुई थी और हाथों में चूड़ियाँ थीं। औरतों ने उससे उसका पता-ठिकाना पूछा, पर वह धारोधार रोए जा रही थी। रोते-रोते उसकी आँखें सूज गईं और आँसू भी सूखने लगे। आसपास भीड़ देखकर वह काफ़ी सिकुड़ गई थी। उम्र उसकी चौबीस-पच्चीस से अधिक न होगी। छोटा गोल चेहरा, साँवला रंग, छोटी सी नाक, बड़ी-बड़ी आँखें और मोटे होंठ।

'ई कौन जगह है?' जब अंधेरा घिरने लगा तो उसने डरकर एक औरत से पूछा। नौसा की माई, जो सफेद रंग की मोटी साड़ी पहने थी और ललाट पर चंदन लगाए थी, बोली - 'अरे, ई तो परशुराम बाबा का जनम-स्थान है। बाबा यहीं पैदा हुए थे। वह देखो, ऊपर टीले पर उनका मंदिर भी है। हाँ, पहले तुम यह बताओ कि कहाँ से आई हो ? कोई दुखिया लग रही हो........'



'क्या कहूँ ए मैया, ' वह रोती हुई बोली, 'हमारे साथ बड़ा धोखा हुआ है। वे लोग मुझे नहलाने के बहाने नैया से यहाँ ले आए। हमारे साथ हमारे देवर, हमारे आदमी, हमारी जेठानी भी थीं। पहले मुझे गंगाजी में नहलाया, फिर बोले, तुम यहीं बैठो, हम लोग भी नहाकर आते हैं। तभी से हम बैठे हैं....'

'अपने गाँव-घर का पता बताओ, हम तुम्हें वहाँ पहुँचा देंगे......' मैंने बीच में ***हस्तक्षेप*** करते हुए कहा।

'ना ए मालिक, गाँव-घर का पता जानकर क्या करेंगे ? मैं अब वहाँ नहीं जाऊँगी। घर में सौत बिठा ली है और लड़के को मुझसे छीन लिया

हस्तक्षेप - दूसरों की बात में दखल देना

है। दोनों मिलकर रोज मेरी कुटम्मस करते हैं। मैं यहीं पड़ी रहूँगी .... .नहीं तो नदी-तालाब में डूब मरूँगी.....'

'अरे, कैसी बात करती हो ? तुम यहाँ रात में कैसे रहोगी ? इतना जाड़ा-पाला है, चलो, वहाँ मंदिर में सधुआइनजी हैं, वहीं रहना। तुम्हारा कोई आदमी-जन आएगा तो चली जाना ......'

इतना कहकर नौसा की माई उसे सधुआइन के पास ले गई थी।

मैं गाँव के प्राइमरी स्कूल में हेडमास्टर हूँ। इसलिए हर तरह के लोग मेरी इज़्ज़त करते हैं। मैं कड़ियल मिजाज़ का ज़रूर हूँ, लेकिन किसी के सुख-दुख में मदद करना भी मेरी आदत है। ठाकुर टोले के चार मकानों में से सबसे बड़ा मक़ान मेरा ही है। मज़े का खेत-बगीचा है मेरे पास और गाँव भर में दबदबा भी है। बात यह है कि मेले में छोड़ी गई उस जवान औरत की वजह से मैं कुछ चिंतित था। पता नहीं कैसी औरत है ? किस गाँव-जवार की है ? उसको लेकर कोई बवाल न खड़ा हो जाए। कहीं वह जान न दे दे। किसी दिन पुलिस-थानेदार आकर किसी को पकड़ न लें ...... आदि-आदि। इस तरह के ***संशय*** गाँव के लोगों के लिए स्वाभाविक होते हैं। क्योंकि आत्मसुरक्षा के हथियार के रूप में ही ये ग्रामीणों द्वारा भी सदा इस्तेमाल किए जाते हैं।

उसके बारे में मुझे नियमित रूप से सूचनाएँ मिलती रहती थीं। नौसा की माई जाति की कहारिन थी। उसका मर्द असम में कमाने-धमाने गया,

---

संशय - शक (सन्देह)



तो वहीं मर-बिला गया। उसके बाद वह पूजा-पाठ में ही ज़्यादा समय बिताने लगी। वह गाँव के पूर्वी छोर पर सड़क के किनारे अपने परिवार के साथ रहती थी। उसके घर के सामने एक पक्का चबूतरे वाला कुआँ था और कुएँ के सामने हम ठाकुर लोगों के घर। मेरी एक बूढ़ी विधवा बुआ थीं, जो मेरे पास ही रहती थीं। उनकी नौसा की माई से ख़ूब पटती थी। वे दोनों गंगाजी नहाने और मंदिर में पूजन-अर्जन करने जातीं और उन्हीं से उस ***परित्यक्ता*** के समाचार मिल जाते।

उसने अपना नाम लाखो बताया था। वह रोज़ सबेरे उठती और कुएँ से पानी भर-भर कर मंदिर को धोती-पोंछती। मंदिर में चावल, दाल, आटा, आलू, जो भी चढ़ावा मिलता उसी को पकाकर खुद भी खाती और सधुआइन को भी खिलाती। एक दिन मैं उत्सुकतावश लाखो की खोज-ख़बर लेने मंदिर

परित्यक्ता - छोड़ी हुई औरत



गया तो सधुआइनजी ने मुझसे कहा, 'ऐ जजमान, ई लाखो यहाँ कब तक रहेगी? ऊँच-खाल कुछ हो जाए तो मंदिर की बदनामी होगी। है तो बहुत ईमानदार और मेहनती। पर, आगे क्या होगा, यह कोई नहीं जानता। मैंने नौसा की माई से कई बार कहा कि इसे अपने घर ले जाओ और घर-गृहस्थी के काम में मदद लो......'

'अच्छा रहिए, मैं भी उससे कहता हूँ....।'

नौसा की माई मेरा कहना मान गई और लाखो मंदिर से आकर गाँव-समाज के बीच रहने लगी। अब अक्सर वह मुझे दिख जाती। और जब नहीं दिखाई पड़ती तब भी उसके बारे में सभी ख़बरें मालूम होती रहतीं। दरअसल गाँव के लोगों के लिए वह एक कौतुक का विषय हो गई थी। लोग उसके बारे में हँस-हँस कर चर्चाएँ करते थे। उसके बारे में ये बातें अस्वाभाविक व अटपटी सी लगतीं और शंकाएँ बढ़ जातीं।

लाखो सुबह अन्धेरा रहते ही उठ जाती और अन्य औरतों के साथ मैदान जाती। वहाँ से लौटकर ठाकुर लोगों के कुएँ के पक्के चबूतरे पर बैठकर गुनगुनाने लगती। साड़ी वह हमेशा ***उटुंग*** पहनती। इससे चिकनी मिट्‌टी की तरह उसकी टाँगें दिखाई देती रहतीं। सुबह-सुबह मोहल्ले के कुछ छोकरे उससे चुहलबाजी करने लगते। इस पर कभी वह उनको जीभ निकाल कर चिढ़ाती, तो कभी थूकती। और जब वे हद कर देते, तो रोने लगती। नौसा की माई जब गंगा-स्नान करने चली जाती तो वह नौसा के साथ खेत पर काम करने जाती। काम करते-करते वह कभी-कभी रोने लगती। इस पर नौसा उसे गालियाँ देता और कभी-कभी हाथ-पैर भी चला देता। जब वह खेत से बोझा अपने सिर पर ढोकर घर चलती, तो रास्ते में ठाकुर लोगों के इमली के बगीचे में बोझा पटककर सुस्ताने लगती और बुदबुदाती रहती। नौसा जब कभी उसे इस हालत में देख लेता तो गाली-गलौच और मार-पीट पर उतर आता।

गर्मी की दोपहर में वह अक्सर ***गड़ही*** के किनारे आकर बैठ जाती। यहाँ कोई नहीं होता था, बस कुछ भैंसे पानी में तैरती रहती थीं। वह किनारे बैठकर दूर तक पानी में कंकड़ व ढेले फेंकती रहती। कभी वह चुपचाप रोने लगती और कभी कोई राहगीर पास से गुज़रता, तो उसे देखकर मुस्कुरा दिया करती। मैंने ख़ुद कई बार उसे वहाँ बैठकर रोते और मुस्कुराते हुए देखा था। मुझे कभी समझ में नहीं आता कि वह ऐसा क्यों करती है ? क्या

उटुंग - ओछी (कम लम्बाई वाली)
गड़ही - छोटा तालाब (जोहड़ी, लेट)

उसने दुख व सुख दोनों ही इतना देखा है कि वह दोनों तरह की हरकतें करती है? अथवा अपने दुख को पछाड़ने के लिए हँसती और मुस्कराती है? कभी-कभी लगता कि वह पागल या अर्द्ध-विक्षिप्त होकर यह सब करती है।

जब वह खुश होती तो अजीब ढंग से उछल-उछल कर चलती। अथवा बदन को तानकर और टेढ़ा करके बाईं तरफ़ तिरछे चलने लगती। सचमुच ऐसे समय में वह सीधे तो चलती ही नहीं, बल्कि तेज़ी से कदम रखती हुई अर्द्धवृत्त-सा बनाने लगती। तब उसके कूल्हे ख़ूब मटकते थे। कभी-कभी वह साड़ी खोंटकर आम, इमली और जामुन के पेड़ों पर जल्दी-जल्दी चढ़ती

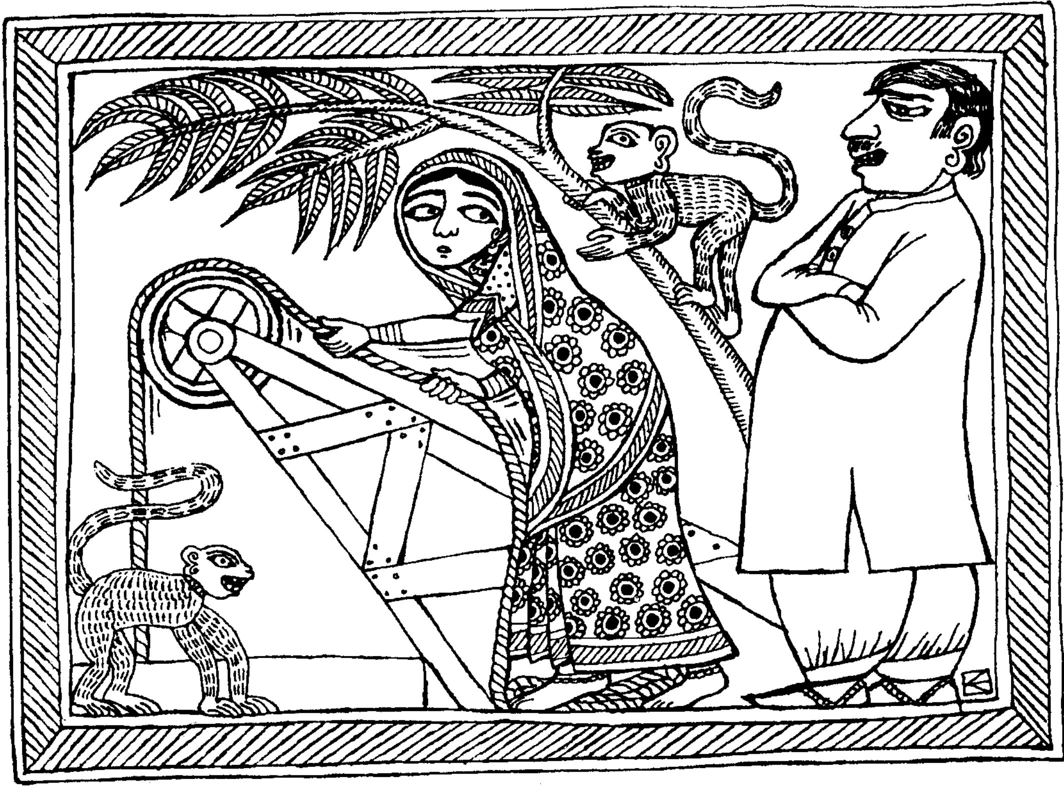


हुई पुलई पर पहुँच जाती। वहाँ बैठ वह ख़ुद फल खाती और डालियों को झोर कर नीचे भी गिराती जाती। ऐसे अवसरों पर गाँव के लड़के और लड़कियाँ इकट्ठे हो जाते और ख़ूब हो-हल्ला मचता। वह भी ख़ूब चीखती-चिल्लाती। उसकी एक बात और भी चिंतित करने वाली थी। ठाकुर लोगों के कुएँ से कुछ लोगों के पानी भरने पर प्रतिबन्ध था। वे लोग दूर पाँतर में जाकर किसी कच्चे कुएँ से पानी लाते अथवा गड्ढे-तालाब से काम चलाते। पर गरमी में बड़ी दिक्कत होती। तब लाखो उनको बुलाकर चुपके से उनके लिए पानी भरकर दे देती।

'ले जाओ....और लेना हो तो आ जाना .... कोई देखने न पाए...' वह फुसफुसाते हुए स्वर में कहती थी।

जब मैंने यह सब सुना तो नौसा की माई को बुलाया। उसे समझाया कि ऐसा करने से गाँव में बवाल हो जाएगा। इसलिए वह उसे मना कर दे। उसने अपनी यह हरकत बन्द की या नहीं, यह तो मैं नहीं कह सकता, पर उसके बाद इस तरह की कोई शिकायत सुनने को नहीं मिली।

मेरे घर से थोड़ी दूरी पर सुल्लू मियाँ नाम के एक रिटायर्ड फ़ौजी रहते थे। वह अपने साथ एक कुत्ता और बंदर-बंदरिया रखते थे। जब वह बाहर निकलते, तो ये तीनों मूर्तियाँ उनके साथ दिखाई देतीं। मेंहदी में रंगे बाल, नाटा चकइठ शरीर, छोटी-छोटी आँखे, सलवार व लम्बी कमीज़ और रास्ते में हर व्यक्ति को रोककर मज़ाक भरी बक-बक। सबेरे ठाकुर लोगों के कुएँ पर वह भी अपने बंदर-बंदरिया के साथ पानी लेने पहुँच जाते। उन्होंने पानी लेने का एक आसान तरीका निकाल लिया था। वह यह कि कुएँ पर



पहुँचते ही वे बंदर-बंदरिया से लाखो को डराने लगते। इस तरह लाखो डरकर मुफ़्त में ही उनका पानी भर देती। सचमुच वह बंदरों से बहुत डरती थी। कभी-कभी बंदरिया कूदकर उसके कंधे पर बैठ जाती। इस पर वह डरकर सड़क पर भागने लगती और मदद के लिए चिल्लाती जाती।

जब मैंने यह सुना, तो मुझे बहुत बुरा लगा। सुल्लू मियाँ मेरे यहाँ आते-जाते थे। मैंने एक दिन उनसे कहा, 'मुसीबत की मारी है। किसी दिन कुएँ-तालाब में डूब मरी, तो सब आप ही को कहेंगे। कहिए, पानी भरने के लिए अपने आदमी को भेज दिया करूँ ?'

'अरे.........मैं तो मज़ाक करता हूँ........' सुल्लू मियाँ शरमा गए।

लेकिन सबसे अधिक चिन्ता मुझे उस समय हुई जब गाँव के कुछ लोगों

ने चुन्नीलाल और लाखो को जोड़कर एक किस्सा सुनाया। नौसा की माई का देवर था चुन्नीलाल। करीब पैंतालिस वर्ष की उम्र, पतली-लम्बी कद-काठी, आँखों से उसे कुछ कम ही दिखाई देता। उसकी दो-दो शादियाँ हो चुकी थीं। पहली बीवी हैज़े से मर गई। दूसरी भी धूमधाम से शादी करके लाई गई। पर एक दिन गहना-गुरिया लेकर वह अपने पुराने यार के साथ चम्पत हो गई। चुन्नीलाल ने काफ़ी दौड़-धूप की। मान-मनौवल चली। पंचायत बैठाई गई। पर वह आने को तैयार नहीं हुई। अब चुन्नीलाल अकेला पड़ गया था। उसके पास थोड़ी बहुत खेती थी। उसके अलावा वह सुबह-शाम ठाकुर टोले में मेरे यहाँ और कम्पाउंडर साहब के यहाँ पानी भर दिया करता।

किस्सा यह है कि एक दिन जाड़े के मौसम में लाखो इमली के बगीचे में बोझ नीचे पटककर बैठी हुई थी। उन दिनों बगीचे में धान का खलिहान लगा हुआ था। चुन्नीलाल भी खेत से लौटकर उसी बगीचे में अपना धान सुखा रहा था। कहते हैं कि लाखो चुन्नीलाल को देखकर मुस्की काटने लगी। फिर दोनों हँस-हँसकर एक-दूसरे से बातें करने लगे। लाखो ख़ूब खुश थी। उन दोनों के इस व्यवहार को गाँव के कई स्त्री-पुरुषों ने देखा। बस, यह ख़बर आग की तरह गाँव भर में फैल गई। लोग कहने लगे, 'अरे, ई देखने में ही पगली लगती है, पर है बहुत चालाक। देखो, चुन्निया को कैसे फँसा लिया। इस चुन्निया का क्या, दो बीवी रख चुका है, एक और रख लेगा।' मैंने नौसा की माई को बुलवाया और कहा, 'बहुत चन्दन-टीका लगाए घूमती हो, कुछ लाखो के बारे में भी सोचा ? अरे, इसकी चुन्निया से शादी करवा दो। चुन्निया भी बे-औरत, बे-औलाद है। उसको एक सहारा मिल जाएगा



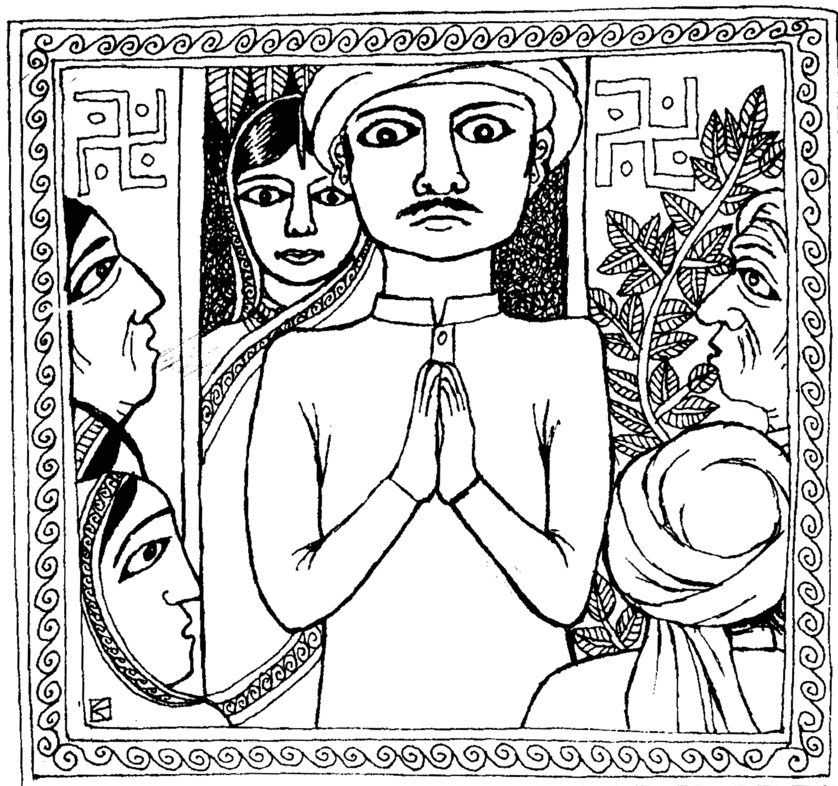
और यह भी एक मर्दवाली हो जाएगी।'

मेरे ज़ोर देने पर दोनों की शादी हो गई। अब लाखो मोहल्ले में किसी की मौसी, किसी की चाची, किसी की भाभी और चुन्नीलाल की बीवी बन गई। वह चुन्नीलाल को 'मलिकार' कहती। उन दोनों को सड़क के किनारे वाला एक कमरा मिल गया। इस शादी से दोनों बड़े खुश रहने लगे। लाखो अब खेत पर भी जाती और चुन्नीलाल के दूसरे कार्यों में सहयोग भी देती। अब दोपहर में खेत से लौटते समय वह इमली के बगीचे में नहीं रुकती। न ही गड़ही के किनारे बैठती। सीधे घर आ जाती। चुन्नी भी अपना काम खत्म कर दोपहर में कमरे पर आ जाता। दोपहर में उनके कमरे का दरवाज़ा बन्द हो जाता। कभी-कभी मोहल्ले के शैतान लड़के बाहर से दरवाज़े पर कंकड़-पत्थर फेंक देते।

चुन्नी और लाखो की इस शादी को गाँव-घर में किसी ने स्वीकारा, तो कुछ लोगों ने अस्वीकार कर दिया। चुन्नी की एक भौजाई इस शादी से बहुत चिढ़ती थी। एक दिन उसने लाखो को ख़ूब गालियाँ दी। कहा, 'अरे, मरद के साथ सोने से कोई ***मेहरारू*** नहीं हो जाएगी। रखैल तो रखैल ही कही जाएगी।'

इसका लाखो ने कोई जवाब तो नहीं दिया। उसने बस चुपचाप कमरे के अन्दर आकर बालों में ख़ूब तेल लगाया। बालों को झाड़ा और चोटी की। फिर माँग में ख़ूब चटक सिंदूर भरा, माथे पर टिकुली लगाई और शादीवाली रंगीन साड़ी पहन ली। अन्त में वह पक्के कुएँ के चबूतरे पर आकर साड़ी मोड़कर बैठ गई। सारे मोहल्ले में तहलका मच गया। कई औरतों ने आकर मनाया, 'यह क्या करती हो? चुन्नी बाहर गए हैं, जब आकर देखेंगे तो क्या कहेंगे? गाँव के लोग क्या सोचेंगे?' पर वह कुछ नहीं बोली। सीधे देखती रही, जैसे दीये की स्थिर ***निर्वात*** लौ जलती जाय, जलती जाय। मैंने स्वयं आकर देखा और उसे समझाया। पर वह टस-से मस न हुई। शाम को चुन्नीलाल आया तो काफ़ी भीड़ हो गई थी। उसने सारा किस्सा सुना तो गुस्से से लाल हो गया। चिल्लाकर बोला, 'हे गाँव के बाबू-बबुआनो, बिरादरी के लोगो, जनता भाई, सभी कान खोल कर सुन लीजिए कि लाखो मेरी विवाहिता है। इसे कोई कुछ कहेगा तो ठीक न होगा। लाखो को कुछ हो गया तो मेरी भी लहास उसी के साथ उठेगी। अब आप लोग अपने घर जाइए, मैं हाथ जोड़ता हूँ.....'

मेहरारू - पत्नी, *निर्वात* - शान्त



वह हाथ जोड़कर खड़ा था। उसकी बाईं टाँग कुछ उठ गई थी, जैसे एक ही टाँग पर खड़ा हो। आँखें वह बुरी तरह मटका रहा था। देखते-ही देखते लोग वहाँ से खिसकने लगे। 'हाँ भाई, मियाँ-बीवी का मामला है।'

जब सभी चले गए तो चुन्नीलाल ने लाखो को अँकवार में लेकर मनाया। फिर उसे बहुत प्यार व इज़्ज़त से अपने कमरे में ले गया।

महीनों बीत गए और बीतने लगे। लाखो और चुन्नीलाल की जोड़ी को पूरी सामाजिक मान्यता भी मिल गई थी। उस दिन की घटना के बाद किसी की हिम्मत नहीं हुई कि उसे कोई चुन्नीलाल की रखैल या कुछ भी अंडबंड कह दे। वे बहुत प्रेम से रहते। चुन्नीलाल उसे फूल की तरह रखता

और चुन्नीलाल को वह जान से अधिक चाहती। वह चुन्नीलाल के हर काम में हाथ बँटाती। उसके लिए रच-रचकर नाश्ता और खाना बनाती। रात में उसके सिर व बदन में तेल लगाती। जब वह बीमार भी पड़ती तो चुन्नीलाल की सदा फ़िक्र करती।

एक बार जेठ की दुपहरिया में चुन्नी व लाखो कुएँ पर पानी भर रहे थे। चुन्नी लाल पानी भरते-भरते थक गया था। अगली बार जब उसने बाल्टी कुएँ में डाली तो बाल्टी के साथ वह भी कुएँ के अन्दर चला गया। जेठ की दुपहरिया में लाखो इस तरह चिल्लाई जैसे उसका ***जबह*** किया जा रहा हो। वह मदद के लिए चिल्लाती हुई सड़क पर बवंडर की तरह भागने लगी। ऊँघता हुआ गाँव जाग गया। मैं भी बाहर निकल आया। चारों ओर चीख-चिल्लाहट की पुकार मची हुई थी। अन्त में कुम्हारों की मदद से चुन्नीलाल को कुएँ में से ज़िन्दा निकाल लिया गया। वह काफ़ी पानी पी गया था। चाक पर घुमा कर ही उसके पेट से पानी निकाला गया।

चुन्नीलाल के बचने से लाखो बहुत खुश हुई। उसने उस दिन दुल्हन के सभी कपड़े और ज़ेवर पहने। गुलाबजामुन और बताशे खरीदकर मंदिर में चढ़ाये और मोहल्ले वालों को प्रसाद बाँटा।

उनकी इस खुशी से मुझे भी संतोष होता था। संतोष इस बात का कि कोई ऐसी-वैसी बात नहीं हुई और एक परित्यक्ता स्त्री पार-घाट लग गई। और मेरे करने से ही यह सब हुआ था, इस बात से मुझे कभी-कभी अपने ऊपर गर्व भी होता। पर सुनने में यह भी आया था कि वे दोनों कोई

जबह - गला काट कर जान लेना

बच्चा न होने से दुखी रहते थे। लाखो ने बहुत इलाज़ कराया, साधु-सन्यासियों के पास गई, पर कोई लाभ नहीं हुआ। कभी-कभी चुन्नीलाल खिन्न हो जाता और लाखो को कुछ कह-सुन देता। वह क्या करती। चुपचाप बैठकर रोने लगती।

बहुत दिन बीत गए थे। एक दिन लाखो रोते-कलपते मेरे घर में आई, तो मुझे बड़ा अचम्भा हुआ। वह सीधे मेरी पत्नी के पास गई थी। पत्नी ने उसे बड़े प्यार से बिठाया और उसकी बात सुनी। उसे कुछ समझाया और अन्त में गेहूँ-चावल फटकने का कुछ काम दे दिया। दोपहर होने पर उसने चार मोटी-मोटी रोटियाँ, सब्ज़ी और अचार लाखो को खाने के लिए दे दिए। उन चार रोटियों में से दो लाखो ने स्वयं खाई और बाकी दो साड़ी के खूँट में बाँधकर चुन्नीलाल के लिए लेती गई। उसके जाने के बाद मैंने पत्नी से पूछा,' क्या बात है, जो वह सबेरे से जमी हुई है ?' 'अरे, वह चुन्नी है न, इसका दिमाग सठिया गया है। बच्चे के लिए हमेशा इसे कोसता रहता है। यह बेचारी इतना करती है उसके लिए, अब बच्चा कहाँ से ले आए? यह तो भगवान की इच्छा से होता है। आज वह सबेरे किसी बात पर बिगड़ गया और इसकी पिटाई कर दी। तब यह रूठकर मेरे यहाँ चली आई। इसका कलेजा बड़ा कोमल है। अकेली से रोटी भी नहीं खाई गई। दो रोटी बचाकर चुन्नी के लिए भी लेती गई।'

धीरे-धीरे चुन्नी बूढ़ा हो गया और उसको आँखों से भी बहुत कम दिखाई देने लगा। अन्त में वह पूरी तरह लाखो पर ही निर्भर रहने लगा। लाखो खेत पर जाती, पानी भरती और चुन्नी की पूरी सेवा भी करती।

और कुछ दिनों बाद चुन्नी की अस्वस्थता का एक ऐसा दौर शुरू हुआ

जो कभी खत्म नहीं हुआ। कमज़ोर और मज़बूर होते ही उसका भतीजा नौसा और उसकी औरत चुन्नी की ख़ूब सेवा करने लगे। वे सदा लाखो के ख़िलाफ़ चुन्नी के कान भरते रहते। चुन्नी उनकी बातों में आकर लाखो के साथ गाली-गलौच करने लगता। इस पर वे भी लाखो के साथ



ज़ोर-ज़ुल्म करने लगते। दरअसल वे चुन्नीलाल को बहकाकर उसका खेत अपने नाम लिखा लेना चाहते थे।

मैंने एक दिन चुन्नी को अपने यहाँ बुलाया। वह लाठी के सहारे काँखते-कराहते आया। मैंने पहले उसे बिठाकर जलपान कराया। फिर नैतिकता का पाठ पढ़ाते हुए समझाया,' तुम्हें कुछ सोचना चाहिए चुन्नी। आख़िर वह तुम्हारी औरत है। तुमको उसने सुख दिया है। तुम्हारी सेवा की है। कभी सोचा भी है तुमने कि तुम्हारे मरने के बाद तुम्हारा भतीजा



लाखो पर कितना ज़ुल्म करेगा? तुम अगर अपना खेत भतीजे के नाम लिखोगे, तो बहुत बड़ा अपराध करोगे। तब भगवान भी तुम्हें क्षमा नहीं करेंगे।'

चुन्नीलाल को बात समझ में आ गई। वह रोते हुए बोला, 'मेरी अक्कल मारी गई है, मालिक। मैं कल ही कचहरी जाकर अपने खेत लाखो के नाम लिख देता हूँ।'

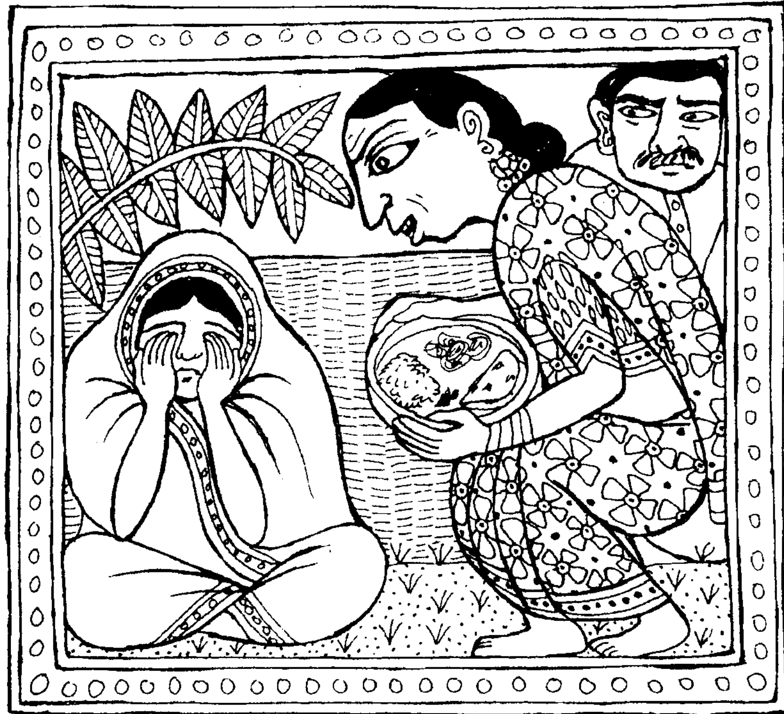
और सचमुच चुन्नीलाल ने अपना सारा खेत लाखो के नाम लिख दिया। इस पर नौसा बड़ा नाराज़ हुआ। वह लाखो का जानी दुश्मन बन गया। पर चुन्नीलाल के सामने लाखो को कुछ कहने की उसकी हिम्मत नहीं हुई।

चुन्नीलाल का स्वास्थ्य बिगड़ता गया और सही दवा-दारू न मिलने के कारण जल्दी ही उसकी मृत्यु हो गई।

उसकी अंत्येष्टि के बाद जब नौसा घर आया, तो रोती हुई लाखो के सामने बैठकर ख़ुद भी रोने लगा। फिर हाथ जोड़कर उसने लाखो से कहा, 'चाची, मैं हाथ जोड़कर अपनी भूल-चूक की माफ़ी माँगता हूँ। मरने के पहले

चाचा ने मेरा हाथ पकड़कर कहा था , 'अपनी चाची का ख़्याल रखना।' ए चाची, तुम किसी बात की चिन्ता न करना। हम तुम्हारे बेटे की तरह हैं। तुम अकेले क्या करोगी, हमारे साथ ही रहो। हम दिन-रात तुम्हारी सेवा करेंगे। हमें भगवान ने बहुत कुछ दिया है, और कुछ नहीं चाहिए। बस, चाचा ने जो कुछ कहा है उसी का पालन करना चाहते हैं।'

इसके बाद नौसा और उसकी पत्नी लाखो की ख़ूब सेवा करने लगे। नौसा की पत्नी उसे कोई काम नहीं करने ही देती। रात को उसके हाथ-पैर दबाती और सिर में तेल लगाती। लाखो तो अपने ही दुख से दुखी थी। अब वह फिर बे-औलाद और बे-मर्द थी। अब उसके पास क्या बचा था? उसने अपने को भतीजे के सहारे छोड़ दिया और उन्हीं के कहे अनुसार चलने



लगी। मैं यह सब सुनता था। पर मैं कर भी क्या सकता था? जानता था कि एक दिन उसका भतीजा उसे धोखा देगा। कभी-कभी सोचता कि हो सकता है, नौसा का दिमाग बदल गया हो। शायद वह हमेशा ही उसके साथ अच्छा व्यवहार करता रहे। अब तो सब कुछ भगवान और किस्मत के सहारे है। अब तो नौसा ही इसको पार-घाट लगाएगा। और यह सब सोचकर मैंने लाखो की समस्याओं में सक्रिय दिलचस्पी बन्द कर दी।

सचमुच लाखो की उन्होंने इतनी सेवा की कि वह उसकी पूरी तरह अभ्यस्त हो गई। वह ईमानदारी से यह विश्वास करने लगी कि नौसा और उसकी बीवी ज़िन्दगी भर उसकी इसी तरह सेवा करते रहेंगे। और उनकी मीठी-मीठी बातों और व्यवहार से तथा उनके बार-बार यह आश्वासन देने पर कि वे ज़िन्दगी भर उसकी सेवा और रक्षा करेंगे, वह इतनी प्रसन्न हुई कि उसने अपना सारा खेत उनके नाम लिख दिया।

ज़मीन लिखा लेने के बाद नौसा और उसकी पत्नी का असली चेहरा प्रकट हुआ। उन्होंने अपना रूप और व्यवहार आसानी से इस तरह बदल लिया कि किसी को भी आश्चर्य हो सकता था। अब वे लाखो के साथ नियमित रूप से गाली-गलौच करने लगे। उसके खाने में कटौती होने लगी। उससे तरह-तरह के काम लिए जाने लगे। जब वह अपनी ज़मीन और हक की बात करती, तो सब मिलकर उसे मारते-पीटते।

धीरे-धीरे लाखो खाने-पीने के अभाव, दुर्व्यवहार और अत्यधिक श्रम के कारण कमज़ोर होती गई। उससे अब और अधिक परिश्रम नहीं हो पाता था। बात-बात पर नौसा और उसकी पत्नी उसे घर में बन्द कर देते। वे उसे पीटते और उसको खाना भी नहीं देते।

एक दिन किसी तरह छिपकर वह मेरे पास आई। वह फूट-फूट कर रो रही थी। मेरी समझ में नहीं आया कि कैसे आश्वस्त करूँ उसे। मैंने उससे कहा कि खेत का टुकड़ा उसी का है। जब तक वह ज़िन्दा है, उसकी मालकिन वही है। उसके मरने के बाद ही उसके पति का भतीजा उसका मालिक बन सकता है। मैंने उसे एक-दो दिन रुकने के लिए कहा। फिर कचहरी चलकर दावा ठोंकने में उसकी मदद करने का वचन दिया।

लेकिन दूसरे दिन ही सुनने में आया कि लाखो का कहीं पता नहीं है। मैं बेहद चिंतित और ***क्षुब्ध*** हो गया। मैंने नौसा से जाकर पूछा, पर वह कसम खाकर कहने लगा कि उसे कुछ भी पता नहीं। कल जब वह घर से गई, तो उसके बाद लौटी ही नहीं।

सच्चाई का, ख़ैर जल्दी ही पता लग गया। मेरे यहाँ से जब लाखो गई तो वह बेहद उत्तेजित थी। वह नौसा के पास जाकर ज़ोर-ज़ोर से अपने हक की बात करने लगी। 'वह चुन्नीलाल की विवाहिता पत्नी है और चुन्नीलाल ने खुद ज़मीन उसके नाम लिखी है। वह पत्नी है, पत्नी ! आज के ज़माने में पत्नी का हक कोई नहीं छीन सकता। वह आज से नौसा और उसकी पत्नी को अपने खेत में नहीं जाने देगी।' दिन भर उसने खाना-पीना कुछ भी नहीं किया और लगातार लड़ती रही।

दिन में तो वे लोग अधिक नहीं बोले, लेकिन रात में उसको बुरी तरह मारा। इतना मारा कि अधमरा-सा कर दिया। फिर घसीटकर उसे घर से बाहर कर दिया। मैंने नौसा को बड़ा फटकारा और मामला पुलिस में देने की धमकी दी। नौसा बेहद डर गया और लगा कसमें खाकर गिड़गिड़ाने।

क्षुब्ध - अशान्त, व्याकुल

मैंने उस समय कोई कार्रवाई नहीं की और यह उम्मीद करता रहा कि लाखो जल्दी ही लौट आएगी। लेकिन चार-पाँच दिनों तक लाखो का कोई पता ही नहीं लगा।

फिर वह दिन नहीं भूलता। आकाश में बादल छाए थे और तेज़ हवा चल रही थी। सुबह का ही समय था। मैं बाहर बरामदे में बैठा अखबार पढ़ रहा था कि मोहल्ले का रामलखन नाई आया। उसने आकर बताया कि गाँव से दूर एक खेत से कुछ राहगीरों ने एक औरत की लाश देखी है। मैं उठ खड़ा हुआ और चादर ओढ़कर बाहर निकल गया।

हवा थी कि रुकने का नाम ही नहीं ले रही थी। हल्की-हल्की बूंदें भी पड़ने लगी थीं। मेरे साथ गाँव के कुछ और लोग भी चल पड़े। मेरी शंका सच साबित हुई। वह औरत कोई नहीं बल्कि लाखो ही थी। खेत उसी का था और वह खेत की मिट्‌टी से पुती हुई थी। ऐसे, जैसे उसने लोट-लोट कर उस खेत में स्नान किया हो।



कैरेन हेडॉक

संयुक्त राष्ट्र अमेरिका के न्यूयार्क शहर में 20 फरवरी 1954 को जन्म। स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ न्यूयार्क, बफेलो से बायोफिज़िक्स विषय में पी.एच.डी.। प्रिन्सटन विश्वविद्यालय, हार्वार्ड विश्वविद्यालय, माऊँट साइनाई स्कूल ऑफ मेडिकल रिसर्च आदि में शोध कार्य। सन 1985 से भारत में। पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ में अस्थाई रूप से कुछ समय बायोफिज़िक्स पढ़ाया। पढ़ाई के साथ–साथ चित्रकारिता सीखी। बच्चों, बड़ों और नवसाक्षरों की दर्जनों पुस्तकों एवं विभिन्न पत्रिकाओं के लिए चित्रकारिता। महिला संगठनों और सभी तरह के जनान्दोलनों में शिक्षाकर्मी, वैज्ञानिक, चित्रकार और सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में सक्रिय। 1987 में नागार्जुन लोक सम्मान समारोह पर विदिशा में सार्वजनिक प्रदर्शनी।

सम्प्रति: मुख्यतः शिक्षा में नवाचार और स्कूली शिक्षा में व्यापक सुधार के लिए होमी भाबा साइंस एजुकेशन सेंटर, मुम्बई और यूनेस्कों के प्रोजेक्टों में सहयोगी। समय–समय पर राष्ट्रीय और स्थानीय स्तर की शिक्षक प्रशिक्षण कार्यशालाओं में मुख्य भूमिका के रूप में हिस्सेदारी।